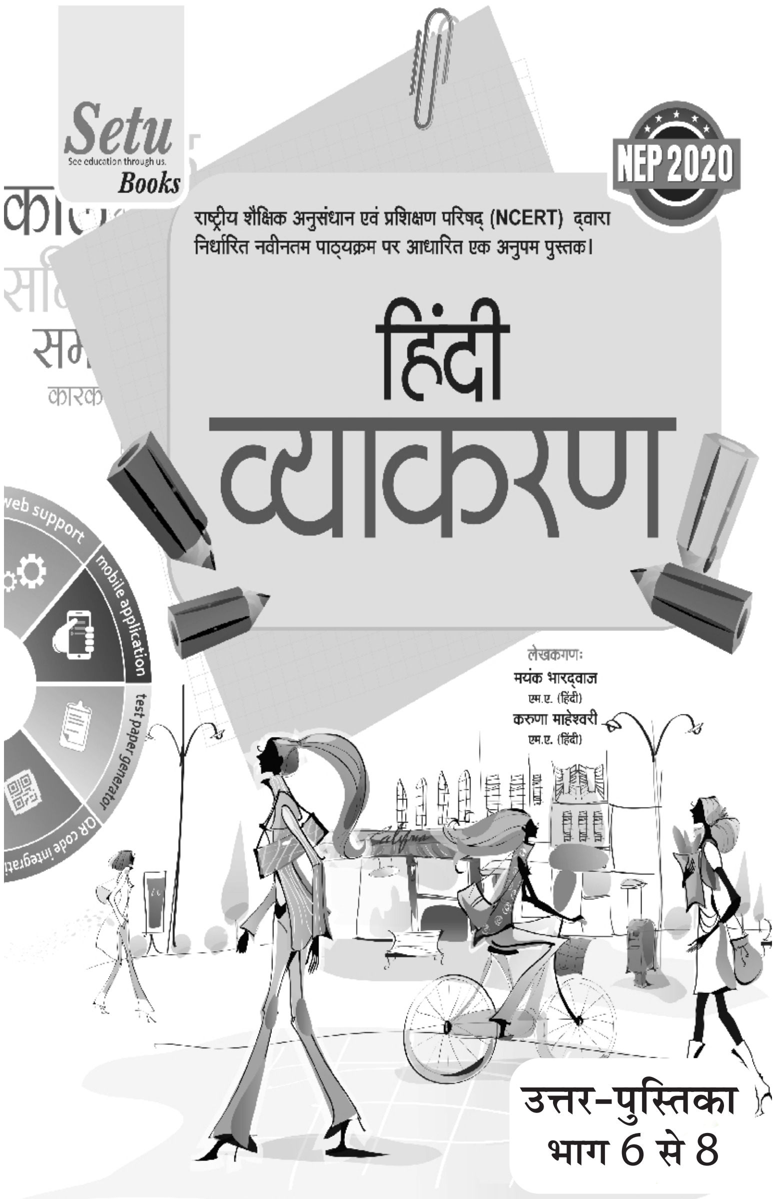

व्याकरण अवनी-6

पाठ-1 : भाषा, बोली, लिपि और व्याकरण

संकलित मूल्यांकन

1. (क) भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों का आदान-प्रदान बोलकर या लिखकर करता है।
   (ख) भाषा लिखने के लिये हम जिन चिह्नों का प्रयोग करते हैं, उसे **लिपि** कहते हैं।
   (ग) व्याकरण वह शास्त्र है जो हमें भाषा के नियमों की जानकारी देता है तथा किसी भाषा को शुद्ध रूप से बोलना तथा लिखना सिखाता है।
2. (क) लिखित भाषा (ख) विस्तृत (ग) साहित्य (घ) भाषा (ङ) व्याकरण
3. (क) (✗) (ख) (✓) (ग) (✗) (घ) (✓) (ङ) (✓)
4. चित्रलिपि—चीनी, रोमन—अंग्रेजी, देवनागरी—संस्कृत, गुरूमुखी—पंजाबी, बंग्ला—बांग्ला, फारसी—उर्दू
5. (क) (v), (ख) (vi), (ग) (i), (घ) (ii), (ङ) (iii), (च) (iv)

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ-2 : वर्ण विचार

संकलित मूल्यांकन

1. (क) सबसे छोटी (ख) अ (ग) तिगुना (घ) चार
2. ऊष्म—4, स्पर्श—25, अंतस्थ—4
3. (क) जब एक व्यंजन का अपने समरूप व्यंजन से मेल होता है तो उसे द्वित्व व्यंजन कहते है।
   (ख) जब एक स्वर रहित व्यंजन अन्य स्वर रहित व्यंजन से मिलता है, तब वह सुंयक्ताक्षर कहलाता है।
   (ग) **अंतस्थ व्यंजन-**इन व्यंजनों का उच्चारण स्वर और व्यंजन के बीच का-सा होने के कारण उन्हें अंतस्थ व्यंजन कहा जाता है। इनमें जीभ मुँह के किसी भी भाग को पूरी तरह नहीं छूती है। ये चार हैं—य, र, ल, व। **ऊष्म व्यंजन-**इन व्यंजनों का उच्चारण करते समय ऊष्मा

उत्पन्न होती है, इसीलिए इन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। इनकी संख्या भी चार है-श, ष, स, ह।

रचनात्मक मूल्यांकन

1. नमक-न + म + क, मिठास-ि + म + ठ + ा + स, नदी- न + द + ी, नगर-न + ग + र
2. पंजा, दाँत, गंजा, आँख, शंकर, पतंग, कंकड़, तरंग।

पाठ-3 : संधि

संकलित मूल्यांकन

1. स्वागत—सु + आगत; लंकेश—लंका + ईश; कपीश—कपि + ईश; संकल्प—सम् + कल्प; दिग्गज—दिक् + गज; संध्या—सम् + ध्या; उल्लेख—उत् + लेख; जगन्नाथ—जगत् + नाथ; वागीश—वागि + ईश; परोपकार—पर + उपकार; महेन्द्र—महा + इन्द्र
2. नि: + चय—निश्चय; सु + अच्छ—स्वच्छ; चुत: + पाद—चतुष्पाद; प्रति + उपकार—परोपकार; राज + इन्द्र—राजेन्द्र; सु + आगत—स्वागत;
3. दो वर्णों के परस्पर मेल से हुए परिवर्तन को संधि कहते हैं। संधि तीन प्रकार की होती है—

   1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग संधि
4. जब जुड़ने वाली दो ध्वनियों में से एक या दोनों व्यंजन हों तो वहाँ व्यंजन संधि होती है।
5. स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं—

   1. दीर्घ संधि 2. गुण संधि 3. वृद्धि संधि 4. यण संधि 5. अयादि संधि
6. संधि युक्त शब्दों को अलग करना संधि-विच्छेद कहलाता है।

   उदाहरण : हिम + आलय = हिमालय देव + इन्द्र = देवेन्द्र

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ-4 : शब्द-विचार

संकलित मूल्यांकन

1. (क) वर्णों के सार्थक समूह को (ख) दो प्रकार के (ग) अपने मूल रूप में (घ) दो

2. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓
3. आम्र-आम, गृह-घर, नासिका-नाक, दुग्ध-दूध, हस्त-हाथ, घृत-घी
4. (क) दो या दो से अधिक शब्दों के योग से बनने वाले शब्द यौगिक शब्द कहलाते हैं। जैसे—रसोईघर (रसोई + घर), सुपुत्र (सु + पुत्र), राष्ट्रपति (राष्ट्र + पति) आदि।

   (ख) जो शब्द संस्कृत भाषा से ज्यों के त्यों हिंदी में आए हैं, उन्हें तत्सम शब्द कहा जाता है; जैसे— मयूर, वानर, पत्र, क्षेत्र, गृह आदि।

   वे शब्द जो हिंदी में संस्कृत से कुछ परिवर्तन के साथ आए है, उन्हें तद्भव शब्द कहा जाता है; जैसे- मोर, बंदर, खेत आदि।

   (ग) उत्पत्ति के आधार पर शब्द चार प्रकार के होते हैं— 1. तत्सम शब्द 2. तद्भव शब्द 3. देशज शब्द एवं 4. विदेशी शब्द।

पर्यायवाची शब्द

संकलित मूल्यांकन

1. जंगल—विहार-✗ , विपिन-✓, वन-✓

   गंगा—देवनदी-✓ , तटिनी-✓ , सुरपगा-✗

   नदी—सरिता-✓ , तीर-✗ , तरंगिनी-✓

   भोजन—आहार-✓ , खाना-✓ , दुग्ध-✗

   चंद्रमा—सोम-✓ , मयंक-✓ , दिवाकर-✗
2. हाथी, गज शेर, सिंह दशन, दंत दानव, राक्षस

विलोम शब्द

संकलित मूल्यांकन

1. (क) असफल (ख) शीत (ग) महान (घ) स्वामी
2. असत्य, असफल, अस्वाभाविक, अशांत, अहिंसक
3. (क) प्राचीन-अर्वाचीन/नवीन (ख) नव्य-पुरातन

   (ग) संपूर्ण-खंडित (घ) महल-कुटिया

   (ङ) समरिद्धि-दारिद्रय

4. सुलह—झगड़ा, जलाना—बुझाना, बदहाल—खुशहाल, जटिल—सरल, शुरु—अन्त, जीना—मरना, निरामिष—सामिष, प्रस्थान—आगमन, दोस्त—शत्रु, पूर्व—पश्चिम, घरेलू—बाहरी, प्रवृत्ति—निवृत्ति

रचनात्मक मूल्यांकन

- **अनुमान से विलोम शब्दों को मिलाइए-**

  अनुज-अग्रज, कोमल-कठोर, उच्च-निम्न, दूर-समीप, ज्येष्ठ-कनिष्ठ

- **दिए गए शब्दों के विलोम शब्द वर्ग-पहेली में से ढूँढ़कर लिखिए-**

  वियोग, संकीर्ण, विस्तार, निष्कृष्ट, समता।

शब्द एक : अर्थ अनेक (अनेकार्थी शब्द)

संकलित मूल्यांकन

1. (क) अमूल्य—जिस वस्तु की कीमत न आँकी जाए।

बहुमूल्य—जो बहुत कीमती हो।

(ख) खेद—गलती करने पर दु:ख जताना।

शोक—मृत्यु पर दु:ख प्रकट करना।

(ग) न्याय—झूठ-सच का फैसला।

निर्णय—किसी भी बात का चुनाव।

(घ) विवेक—अच्छाई-बुराई की पहचान।

ज्ञान—किसी विषय वस्तु की जानकारी।

(ङ) अनिल—हवा

अनल—आग

(च) अनुमति—किसी कार्य की सहमति।

आज्ञा—बड़े व्यक्तियों द्वारा दिया गया आदेश।

2. मधु—शहद, बसंत; नायक—नेता, मार्गदर्शक; विधि—भाग्य, ईश्वर; पक्ष—तरफ, पंख; गुरु—शिक्षक, चालक; पत्र—खत, चिट्ठी; पूर्व—पहले, एक दिशा; अरुण—सिंदूर, लाल

3. (क) कुल—कुल 20 विद्यार्थी बस में थे।

कूल—गंगा तट के कूल पर काफी घाट हैं।

(ख) दशा—बीमार व्यक्ति की दशा देखी नहीं जाती है।

दिशा—हमारे घर में पूजा का स्थान उत्तर दिशा में होना चाहिए।

(ग) ग्रह—ग्रहों में बुध ग्रह सबसे बड़ा है।

गृह—गृह की लक्ष्मी बेटियाँ होती हैं।

(घ) समान—आजकल बेटी व बेटा एक समान हैं।

सामान—माँ बाजार सामान लेने गयी है।

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ-5 : उपसर्ग

संकलित मूल्यांकन

1. उपसर्ग—अभि, अभ, अन्तर, निर, परा, प्रति

   मूल शब्द—मान, यारण्य, राष्ट्रीय, र्लज्ज, जय, एक

2. चिर + स्थायी = चिरस्थायी, सु + यश = सुयश, वि + शेष = विशेष

   परि + क्रमा = परिक्रमा, सत + संगति = सतसंगति

रचनात्मक मूल्यांकन

- **दो भिन्न उपसर्ग जोड़कर दो-दो शब्द बनाइए-**

  दुर्गंध, सुगंध; उपकार, अपकार; कुपुत्र, सुपुत्र; दुराचार, लाचार

- **दो भिन्न उपसर्ग जोड़कर दो-दो शब्द बनाइए-**

  निर्जर-निर, जर; विशेष-वि, शेष; सुपुत्र-सु, पुत्र; निर्मल-निर, मल; अत्याचार-अति, आचार

पाठ-6 : प्रत्यय

संकलित मूल्यांकन

1. मूल शब्द—मीठा, चौड़ा, सुर, सुनार, गरीब, मजदूर, लग

   प्रत्यय—आस, ई, ईला, इन, ई, ई, आन

2. इन-पुजारिन, धोबिन; ई-अमीरी, गरीबी; त्व-लघुत्व, तत्व; आहट-घबराहट, गड़गड़ाहट; वाला-दूधवाला, तन्दूरवाला; एरा-सपेरा, लुटेरा; आव-कटाव, बहाव; आकू-पढ़ाकू, लड़ाकू

3. पढ़-आई, पढ़ाई; घबरा-हट, घबराहट; बन-आवट, बनावट; लिख-आवट, लिखावट; गिर-आवट, गिरावट; देवर-आनी, देवरानी; दुकान-दार, दुकानदार; आकू-पढ़ाकू, लड़ाकू

रचनात्मक मूल्यांकन

- **सही प्रत्यय पर ✓ लगाइए–**

धोबी—इन, डिब्बा—इया, उपज—आऊ, जादू—गर, साँप—एरा, पहाड़—ई, मास—इक, गीत—कार

पाठ–7 : समास

संकलित मूल्यांकन

1. (क) राजा-रानी (ख) पंचवटी (ग) चंद्रशेखर (घ) आमरण
2. (क) तीनों नदियों का समूह—द्विगु, (ख) सम्मान को प्राप्त—तत्पुरुष, (ग) नीले रंग का कमल—कर्मधारय, (घ) चंद्र के समान मुख—कर्मधारय (ङ) चार राहों का समूह—द्विगु, (च) पथ से भ्रष्ट—तत्पुरुष (छ) घी और शक्कर—द्वद्व, (ज) रात और रात में—अव्ययीभाव, (झ) सौ वर्षों का समूह—द्विगु, (ञ) प्रति एक—अव्ययी भाव
2. (क) नवरात्र—द्विगु (ख) यथाशीर्घ—अव्ययीभाव
   (ग) लंबोदर—बहुब्रीहि (घ) आजन्म—अव्ययीभाव
   (ङ) विद्याहीन—तत्पुरुष (च) दाल-रोटी—द्वद्व
   (छ) निर्वाणप्राप्त—तत्पुरुष (झ) वनवास—तत्पुरुष
4. (क) जिस समास में पहला पद संख्यावाची तथा समस्तपद समूहबोधक हो वहाँ द्विगु समास होता है।
   (ख) वह सामासिक शब्द जिसमें उत्तर पद (बाद का) प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। इनमें कारक चिह्नों का लोप हो जाता है।

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ–8 : संज्ञा

संकलित मूल्यांकन

1. प्रभुत्ता, चंचलता, साधुता, हीनता, पुरूषत्व
2. किसी व्यक्ति, जाति, पदार्थ, भाव या गुण के नाम को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा के तीन भेद होते हैं—1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा :** किसी विशेष व्यक्ति वस्तु या स्थान का नाम जैसे-सरदार, पंडित नेहरू, रानी लक्ष्मीबाई, रामचरितमानस

आदि। 2. **जातिवाचक संज्ञा :** किसी समूह या जाति का नाम जैसे-आदमी, शहर, पर्वत, बालक आदि। 3. **भाववाचक संज्ञा :** व्यक्ति या वस्तु के गुण-दोष या भाव का नाम जैसे-सरदार, पंडित नेहरू, रानी लक्ष्मीबाई, रामचरितमानस आदि।

3. भाववाचक संज्ञा शब्द जिस प्रकार के शब्दों से बनते हैं; उनका विवरण इस प्रकार है। जैसे—अहं-अहंकार, बूढ़ा, बुढ़ापा, आदि।

पाठ–9 : लिंग

संकलित मूल्यांकन

1. (क) नहीं (ख) नहीं (ग) पुल्लिंग (घ) स्त्रीलिंग
2. **स्त्रीलिंग**–चाबी, चटनी, लुटिया, पत्नी,
   पुल्लिंग–रुपया, पैसा, बटन, मोती, मोर, धन, दौलत, वृक्ष, पानी, चाँद
3. बुढ़िया-बुढ़ा, कृष्णा-कृष्ण, रूपमती-रूपवान, देवरानी-देवर, चोरनी-चोर, ललाइन-लाला, पाठिका-पाठक, ठकुराइन-ठाकुर
4. (क) चीता, उल्लू, मच्छर, खटमल, (ख) गिलहरी, मछली, तितली, मक्खी

रचनात्मक मूल्यांकन

- **'ई' लगाकर बने इन शब्दों से 'इ' हटाकर बोलिए–**

द्वादश, चतुर्थ, पंचम, षष्ठ

- **दस पुल्लिंग एवं उनके दस स्त्रीलिंग शब्दों की एक सूची बनाइए–**

पुल्लिग–1. प्रिय 2. शिष्य 3. सुत 4. कृष्ण 5. बाल 6. बंदर 7. गुड्डा 8. कुत्ता 9. बूढ़ा 10. लोटा

स्त्रीलिंग–1. प्रिया 2. शिष्या 3. सुता 4. कृष्णा 5. बाला 6. बंदरिया 7. गुड़िया 8. कुतिया 9. बुढ़िया 10. लुटिया

पाठ–10 : वचन

संकलित मूल्यांकन

1. भिखारिनें, आँख, सेठानियाँ, वधु, नदियाँ, पुस्तकें, भँवरे, अलमारियाँ
2. (क) लड़की गुड़िया की शादी रचा रही है।
   (ख) मेरी पुस्तकें फट गई हैं।

(ग) नानी कहानियाँ सुनाती है।

(घ) छात्रगण शोर मचा रहे हैं।

3. आकाश, जनता, पानी, वर्षा, बालू

4. आँसू, राम, हस्ताक्षर, ओठ, दर्शन

रचनात्मक मूल्यांकन

- **बहुवचन बनाने के लिए इन शब्दों में अंत में क्या जुड़ेगा, लिखिए–**

  महिलाएँ, बटनों, नारियाँ, जलेबियाँ, खिड़कियाँ, सेनाएँ, वधुएँ, वस्तुएँ

- **बॉक्स में दिए गए शब्दों में से एकवचन और बहुवचन शब्द छाँटकर उनके उचित स्थानों पर लिखिए–**

  एकवचन–कपड़ा, रात, कुत्ता, कमीज, मुर्गा, बेटी, गन्ना

  बहुवचन–हीरे, पुस्तकें, आँखें, गाड़ियाँ, घंटे, स्त्रियाँ, झीलें, मालाएँ, चूहे

पाठ–11 : कारक

संकलित मूल्यांकन

1. (क) अपादान (ख) अधिकरण (ग) संबंध (घ) संबंध (ङ) करण (च) संबोधन

2. (क) की (ख) पर (ग) का (घ) में

3. (क) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से जाना जाए, उसे कारक कहते हैं।

   (ख) कारक के भेद—कर्ता (ने); कर्म (को); करण (से); संप्रदान (के लिए); अपादान (से); संबंध (का, के, की, रा, रे, री); अधिकरण (में, पर); संबोधन (हे, अरे)।

रचनात्मक मूल्यांकन

- **परसर्गों के संबधित कारक बताइए–**

  संबंध, अपादान, अधिकरण, संबोधन, कर्ता, कर्म

पाठ–12 : सर्वनाम

संकलित मूल्यांकन

1. (क) मैं (पुरुषवाचक), (ख) उसे (निश्चयवाचक), (ग) मैं (निजवाचक), (घ) कौन (प्रश्नवाचक), (ङ) वह (अनिश्चयवाचक)

2. मैंने निमिषा से पूछा ''तुम क्या कर रही हो।'' वह बोली—''विशेष कुछ नहीं, बस यूँ ही बैठी। मैंने उसे समझाया कि तुम समय का महत्व नहीं जानती क्या? तुम उपयोगी कार्य में मन लगाओ।

3. (क) पुरुषवाचक सर्वनाम—इसके अन्तर्गत कहने वाला (वक्ता), सुनने वाला (श्रोता) और जिसके बारे में बात की जा रही हो उसके लिए प्रयुक्त सर्वनाम आते हैं।

   उत्तम पुरुष—जिनका प्रयोग स्वयं के लिए किया जाता है—मैं, हम, मेरा, हमारा, हमें आदि।

   मध्यम पुरुष—जिनका प्रयोग सुनने के लिए किया जाता है—तू, तुम, तुम लोग, आप आदि।

   अन्य पुरुष—जिस व्यक्ति या वस्तु के बारे में बात की जा रही है—यह, वह, वे लोग, उसे, उनको आदि।

   (ख) जिन सर्वनामों का प्रयोग अपनेपन का बोध कराने के लिए किया जाता है, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। मैं अपनी चाय स्वयं बनाऊँगा। आप अपने आप मशीन चला लीजिए।

रचनात्मक मूल्यांकन

- **शब्दों को संबंधित सर्वनाम से मिलाइए–**

  अनिश्चयवाचक सर्वनाम—कुछ; प्रश्नवाचक सर्वनाम—कौन, किसने, क्या; निजवाचक सर्वनाम—अपने आप, स्वयं; पुरुषवाचक सर्वनाम—तुम, तू

पाठ–13 : विशेषण

संकलित मूल्यांकन

1. (क) विशेषण कहते हैं (ख) तीन (ग) चार (घ) अंतर है

2. खाना—खाद्य, नाटक—नाटकीय, लूटना—लूटपाट, क्षेत्र—क्षेत्रीय, पढ़ना—पढ़ाई, दर्शन—दर्शनीय, ऊपर—उपरोक्त, प्यार—प्यारा

3. (क) जो शब्द किसी संज्ञा शब्द के गुण, दोष, रंग या आकार आदि का बोध कराते हैं, वे गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

   (ख) जिन शब्दों से किसी वस्तु के नाप-तौल का बोध होता है, वे परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

4. (क) विशेषण—बुद्धिमान, साहसी, सजीला

   विशेष्य—राजा, अभिमन्यु, जवान

विशेषण—मनमोहक, सजग, विषम, अबूझ

विशेष्य—दृश्य, प्रहरी, ज्वर, पहेली

(ख) विषैला-कीट, कसैला-स्वाद, भ्रष्टाचारी-सांसद, हितैषी-मित्र, मनमोहक-सुगंध, असमय-मृत्यु

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ–14 : क्रिया

संकलित मूल्यांकन

1. (क) सकर्मक (ख) सकर्मक (ग) सकर्मक
   (घ) सकर्मक (ङ) अकर्मक
2. (क) जाएँगे (ख) पढ़ते (ग) उड़ाता
   (घ) चलाता (ङ) बुनती

रचनात्मक मूल्यांकन

1. (क) हम पुस्तक खरीदेंगे। (ख) तुम कहाँ जा रही हो?
   (ग) आप यहाँ पधारें। (घ) मैं कल जाऊँगा।
   (ङ) आजकल सर्दी हो रही है।
2. गाना, नहाना, सोना, खाना, हँसना, सजना, बुनना, नाचना, चलना, रटना, बचना

पाठ–15 : काल

संकलित मूल्यांकन

1. संदिग्ध भूत, सामान्य भूत, आसन्न भूत, पूर्ण भूत, हेतुहेतुमद् भूत
2. भविष्यत् काल के दो भेद हैं- सामान्य भविष्य, संभाव्य भविष्य
3. संदिग्ध वर्तमान—चिड़िया उड़ती होंगी।
   झरना बहता होगा।
   सेवक आता होगा।
   बसें चलती होंगी।
4. (क) सामान्य भविष्यत् (ख) संभाव्य भविष्यत्
   (ग) सामान्य वर्तमान, (घ) संदिग्ध भूत,
   (ङ) संदिग्ध भूत

रचनात्मक मूल्यांकन

1. स्वयं कीजिए।
2. स्वयं कीजिए।

पाठ–16 : वाच्य

संकलित मूल्यांकन

1. (क) माताजी द्वारा बच्चों को कंबल दिए गए।
   (ख) तुम्हारे द्वारा व्याकरण की पुस्तक पढ़ी गयी है।
   (ग) आज हमारे द्वारा क्रिकेट खेला गया है।
   (घ) प्रतिवर्ष स्वास्थ्य-सेवाओं पर सरकार द्वारा योजनाएँ बनाई जाती हैं।
2. (क) कृतवाच्य (ख) कर्मवाच्य (ग) भाववाच्य
   (घ) कृतवाच्य (ङ) कर्मवाच्य
3. (क) क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है अथवा भाव है, उसे वाच्य कहते हैं।
   (ख) जिन वाक्यों में क्रिया का कर्ता प्रधान होता है और उसी के वचन तथा लिंग के अनुसार क्रिया के रूप चलते हैं, वहाँ कृतवाच्य होता है।
   जब वाक्य में न तो कर्ता और न कर्म प्रधान हो अपितु क्रिया का भाव ही मुख्य हो, वहाँ भाववाच्य होता है।

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ–17 : वाक्य-विचार

संकलित मूल्यांकन

1. (क) राशि—ने त्योहार के लिए खूब खरीदारी की।
   (ख) नरेश—मद्रास चला गया।
   (ग) दादीजी—ने कहानी सुनाई
   (घ) पायल और रजत—दिल्ली गए।
   (ङ) हमारे पड़ोसी—कुशलपूर्वक हैं।

2. (क) मैंने एक युवती को हरी चूड़ियाँ पहने हुए देखा था।
(ख) आप छाया में बैठो और पानी पियो।
(ग) लड़का थक कर सो गया।

3. (क) प्रश्नवाचक (ख) इच्छावाचक (ग) संदेहवाचक
(घ) विस्मयवाचक

4. (क) तुम अपने जूठे बर्तन स्वयं उठाओ।
(ख) मुझसे झूठ नहीं बोला जाता।
(ग) शशि को सेब काटकर खिलवा दो।
(घ) मैं यह इमारत पहले देख चुकी हूँ।
(ङ) मेरे दस रुपये खो गये।

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ–18 : अव्यय (अविकारी शब्द)

संकलित मूल्यांकन

1. (क) समान (ख) क्रियाविशेषण
(ग) रीतिवाचक क्रियाविशेषण (घ) परिमाण को

2. (क) जोर से (ख) भीतर (ग) वहाँ (घ) अभी

संबंधबोधक अव्यय

संकलित मूल्यांकन

1. (क) के अंदर (ख) के ऊपर (ग) के मारे
(घ) के पीछे (ङ) के भीतर

2. (क) पहले (ख) नीचे (ग) ऊपर (घ) पास

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

समुच्चय बोधक

संकलित मूल्यांकन

1. (क) इसलिए (ख) अन्यथा (ग) ताकि
(घ) और (ङ) क्योंकि

2. (क) तत्पश्चात (ख) किंतु (ग) इसलिए (घ) ताकि

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

निपात

संकलित मूल्यांकन

1. (क) वाह (ख) अरे (ग) हाय राम (घ) होशियार

2. हाय! इतना बड़ा हादसा।
वाह–वाह! क्या कमाल की चित्रकारी है।
शाबाश! इसी तरह सफलता प्राप्त करते रहो।
छि:! कितनी गन्दगी फैली हुई है।

3. (क) छि: छि: कितनी दुर्गंध फैली है।
(ख) हाय राम! इतना बड़ा साँप।
(ग) वाह! क्या सुंदर दृश्य है।
(घ) तौबा–तौबा इतनी मार–काट।

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ–19 : सामान्य अशुद्धियाँ

संकलित मूल्यांकन

1. ऐतिहासिक, ईश्वर, निष्ठा, सृष्टि, उज्जवल, प्रतिष्ठा, निर्मल, स्वतन्त्रता, कृपया, मूर्ति।

2. (क) हमने काम कर लिया है। (ख) दो रुपये खो गये।

(ग) एक सिक्का गिरा पड़ा था। (घ) आज बरसात होगी।

(ङ) चिड़िया दलिया खाकर उड़ गयी।

पाठ-20 : विराम-चिह्न

संकलित मूल्यांकन

1. पहले-पहले विद्यार्थी को पढ़ना-लिखना एक मुसीबत जान पड़ता है। किंतु, धीरे-धीरे उसे यह अच्छा लगने लगता है। यदि पुस्तकों से प्रेम हो तो, हमें मानो खजाना ही मिल जाता है। पुस्तकों से न केवल ज्ञान बढ़ता है, वरन् शांति से ध्यान एकाग्र करने की योग्यता भी अर्जित होती है। जीवन के उतार-चढ़ाव और नाना प्रकार की समस्याओं के बीच पुस्तकें हमारी सच्ची मित्र और मार्गदर्शक बन जाती हैं।

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ-21 : मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

संकलित मूल्यांकन

1. बाट देखना (प्रतीक्षा करना)—पिताजी घंटों से माँ की बाट देख रहे थे पर माँ को घर की कोई चिन्ता ही नहीं थी।

   मिट्टी में मिल जाना (व्यर्थ हो जाना)—इस वर्ष भी यदि परीक्षा का परिणाम अच्छा नहीं आया तो दीदी की मेहनत मिट्टी में मिल जाएगी।

   मुँह पर कालिख पोतना (अपमानित करना)—शिवम ने छुप-छुप कर जुआ खेलना शुरू किया था पिताजी को पता चला तो उन्होंने कहा कि तूने तो पूरे मोहल्ले के सामने हमारे मुँह पर कालिख पोत दी यह काम करके।

   मीठी चुटकियाँ लेना (हँसी-हँसी में व्यंग्य करना)—शादी के घर में सभी एक-दूसरे से मीठी चुटकियाँ लेते रहते हैं।

   रंग बदलना (कही हुई बात से इंकार करना)—पहले रिश्तेदार कहते थे कोई भी जरूरत हो हमें याद कर लेना। आज जब सही में रिश्तेदारों की आवश्यकता पड़ी तो सभी ने रंग बदल लिया।

   लट्ठ मारना (बोली में कठोरता)—हमारी दादी की बोली ऐसी है मानो लट्ठ मार रही हो।

   लकीर का फकीर होना (पुरानी बातों को नहीं छोड़ना)—जमाना बदल गया, परन्तु बड़े लोग लकीर के फकीर बने रहते हैं।

   हाथ खींचना (सहायता बंद कर देना)—पिताजी के देहान्त के बाद जब तक पेंशन आती थी, तब तक तो ताऊजी भी मदद कर देते थे। जब से पेंशन आनी बंद हुई है उन्होंने भी हाथ खींच लिया।

   हाथ धोकर पीछे पड़ना (तंग करना)—बच्चे जब एक चीज की जिद्द पकड़ लेते हैं, जब तक उनकी जिद्द पूरी न कर दें हाथ धोकर पीछे पड़ जाते हैं।

2. (क) अनुभवी होना—सेठ रामलाल ने घाट-घाट का पानी पिया है इसलिए आज वह इतने बड़े व्यापार के स्वामी हैं।
   (ख) गरीब परिवार में जन्मा गुणवान—सुमित ने बड़े कष्टों से पढ़ाई पूरी की। आज सरकारी नौकरी पाकर वह गुदडी का लाल बन गया।
   (ग) स्वयं की परवाह न करते हुए दूसरों की सहायता करना—माँ अपने बच्चे की सुरक्षा के लिए जान पर भी खेल जाती है।
   (घ) मूर्ख बनाना—उल्लू बनाकर निकलने वाले ज्यादा दिन तक छुपे नहीं रह सकते हैं।

रचनात्मक मूल्यांकन

अगर-मगर करना, नमक-मिर्च लगना, दाने-दाने को तरसना, दूध का दूध पानी का पानी करना।

लोकोक्तियाँ

संकलित मूल्यांकन

1. (क) जो मनुष्य जिस स्थान या समाज में रहता है उसको उसी जगह या समाज के लोगों की बात समझ में आती है। यह तो वही बात है—खग ही जाने खग की भाषा।
   (ख) मेरे पूरे महीने परिश्रम से प्रयोग करने के बाद भी मुझे दस में से एक ही परिणाम मिला अर्थात् खोदा पहाड़ निकली चुहिया।
   (ग) यदि आप किसी के लिए अच्छा नहीं सोच सकते तो आपके साथ भी कभी अच्छा नहीं हो सकता। इसलिए कहा जाता है बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ से पाए।
   (घ) विशाल: मुझे ब्रेड खाना पसन्द है। महेश: आलू का परांठा ब्रेड से ज्यादा स्वादिष्ट होता है। बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद।

(ङ) यदि आप चोरी करोगे तो ज्यादा दिन तक छिप नहीं पाओगे। कोयले की दलाली में मुँह काला अवश्य होगा।

2.पसंद आना, कोरी धमकी, रूठना, मारे-मारे फिरना, बहुत परिश्रम करना

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

■■■

व्याकरण अवनी-7

पाठ-1 : भाषा, लिपि और व्याकरण

संकलित मूल्यांकन

1. (क) मौखिक तथा लिखित भाषा में अंतर— 1. मौखिक भाषा आसानी से सीख सकते हैं, किंतु लिखित भाषा अभ्यास द्वारा ही आती है। 2. मौखिक भाषा में ध्वनियों को बोलकर मनुष्य अपने मनोभावों तथा विचारों को प्रकट करता है, किंतु लिखित भाषा में उन ध्वनि चिन्हों को लिखकर अपने मनोभावों तथा विचारों को प्रकट करता है।

(ख) शब्द विचार—इसके अंतर्गत शब्द-रचना तथा शब्दों के प्रकार के विषय में विचार किया जाता है।

(ग) देवनागरी, रोमन, गुरुमुखी, बांग्ला, देवनागरी।

2. (क) भाषा वह माध्यम है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने भावों तथा विचारों का आदान-प्रदान करता है। भाषा के दो रूप होते हैं—मौखिक भाषा, लिखित भाषा।

(ख) किसी भाषा की मौखिक ध्वनियों को लिखित रूप में प्रकट करने के लिए निश्चित किए गए चिन्हों को लिपि कहते हैं।

(ग) व्याकरण वह शास्त्र है जिसके माध्यम से हम भाषा से हम भाषा का शुद्ध रूप से बोलना तथा लिखना सीखते हैं। व्याकरण के तीन रूप होते हैं—1. वर्ण विचार 2. शब्द विचार 3. वाक्य विचार।

(घ) क्योंकि व्याकरण से ही किसी भाषा में स्थिरता, शुद्धता तथा मानकता आती है।

3. (क) प्रचार, प्रसार (ख) सांकेतिक (ग) देवनागरी (घ) बोलना, लिखना (ङ) वर्ण विचार।

4.(क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✗) (घ) (✓) (ङ) (✓)

5. कश्मीरी—शारदा, हिंदी—देवनागरी, उर्दू—फारसी, पंजाबी—गुरूमुखी, बंगाली—बांग्ला, अंग्रेजी—रोमन।

6. (क) मौखिक भाषा (ख) मौखिक भाषा (ग) मौखिक भाषा (घ) मौखिक भाषा (ङ) मौखिक भाषा

रचनात्मक मूल्यांकन

(क) लिखित भाषा (ख) मौखिक भाषा

(क) सांकेतिक भाषा (ख) सांकेतिक भाषा

पाठ-2 : वर्ण-विचार

संकलित मूल्यांकन

1. (क) 52 (ख) 11, 41 (ग) 4 (घ) ह

2. **स्पर्श-**ज, त, ड, ग, क, झ, म, च

अंतस्थ-ल, र, य

ऊष्म-श, ह

3. **द्वित्व-**चक्की, पक्का, बल्ला, सिक्का; **अनुस्वार-**चंदा, शंख, रंग, चंद्र; **अनुनासिक-**दाँत, आँख, आँचल, भाँति

4. मेला—म + ए + ल + ा; मालिन—म + आ + ि + ल + न; समोसा—स + म + ो + स + ा; कचौरी—क + च + ौ + र + ी

5. (क) श, ष, स, ह (ख) य, र, ल, व

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ–3 : शब्द–विचार

संकलित मूल्यांकन

1.(क) योगरूढ़ (ख) तत्सम् (ग) समुच्चयबोधक (घ) दुग्ध

2. अंग्रेज़ी—नर्स, डॉक्टर; तुर्की—तोप; पुर्तगाली—बाल्टी, अलमारी, तौलिया; अरबी–मुहावरा

3. तद्‌भव—सावन, किसान, आँसू; तत्सम—श्रावण, कृषक, अश्रु; देशज—बाबा, लोटा, खटिया; विदेशी–पेंसिल, बिल, डॉक्टर

4. (क) जब कोई शब्द यौगिक होते हुए भी सामान्य अर्थ को न प्रकट कर रूढ़ अर्थ को दर्शाते हैं, वे योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं। जैसे— 'घनश्याम' (घन + श्याम) (अर्थ–बादल + काला) कृष्ण के लिए प्रयुक्त होता है। इसी तरह शब्द 'चतुर्भुज' (अर्थ चार + भुजा) विष्णु के लिए प्रयुक्त होता है। अत: ये योगरूढ़ शब्द हैं।

(ख) दो या दो से अधिक सार्थक शब्दों के मेल से बने शब्द यौगिक शब्द कहलाते हैं; जैसे—रसोईघर = रसोई + घर, भोजनालय भोजन + आलय आदि।

(ग) रचना तथा बनावट के आधार पर शब्द—भेद

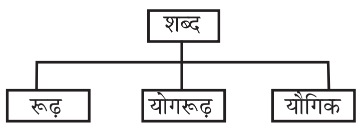

(घ) विपरीत अर्थ का बोध कराने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं; जैसे— आदि × अंत, उदय × अस्त, वीर × कायर आदि।

रचनात्मक मूल्यांकन

1. स्वयं कीजिए।

पाठ–4 : संज्ञा

संकलित मूल्यांकन

1. (क) दूरी (ख) सज्जनता (ग) दानवता (घ) मित्रता

2. व्यक्तिवाचक संज्ञा—विंध्याचल, मद्रास, कामिनी, रामदेव, लक्ष्मीबाई
भाववाचक संज्ञा—बुढ़ापा, सच्चाई, बचपन, सुंदरता
जातिवाचक संज्ञा—स्त्रियाँ, झुंड, लड़का, मंडली

3. भाववाचक संज्ञा—मनाही, भय, क्रूरता, लालिमा, धुलाई, सफेदी, दानवता, गंभीरता, चतुराई, निपुणता, घबराहट, सिलाई, मिठास

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ–5 : लिंग

संकलित मूल्यांकन

1. (क) आँख (ख) टहनी (ग) चटाई (घ) दहलीज

2. रचयित्री, गुणवान, पुत्रवती, ऊँट, भगवती, कहार, विधवा, नाती, साम्राज्ञी, ठाकुर

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ–6 : वचन

संकलित मूल्यांकन

1. (क) शिक्षकगण (ख) साधु (ग) बालियाँ (घ) युवागण

2. नदियाँ, कुटियाँ, माता, तिथियाँ, निधियाँ, राशियाँ, बहनें, पलकें, समितियाँ, रातें, उपमा।

3. (क) वस्तुएँ (ख) हम (ग) परदा (घ) अच्छे

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ–7 : कारक

संकलित मूल्यांकन

1. (क) से (ख) ने, को (ग) ने (घ) का (ङ) अरे।

2. ने, को, से, हे! अरे!, के लिए

पाठ–8 : सर्वनाम

संकलित मूल्यांकन

1. (क) निजवाचक (ख) निजवाचक (ग) प्रश्नवाचक
(घ) निश्चयवाचक (ङ) अनिश्चयवाचक

2. तुम कौन हो?
   यह क्या है?
   तुम कहाँ जा रहे हो?
   हम कल घूमने गये थे।
   अपना काम स्वयं करना चाहिए।
   वह कल गिर गया।

3. (क) सर्वनाम के छह भेद होते हैं—

1. पुरुषवाचक सर्वनाम	2. निश्चयवाचक सर्वनाम
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम	4. प्रश्नवाचक सर्वनाम
5. संबंधवाचक सर्वनाम	6. निजवाचक सर्वनाम

(ख) जो शब्द किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी की निश्चितता का बोध कराते हैं, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—यह, इन, उन, वह, वे, ये, उस आदि। वे सर्वनाम शब्द जो किसी निश्चित वस्तु अथवा व्यक्ति का बोध नहीं कराते, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे—कौन, कुछ, कोई आदि।

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ–9 : विशेषण

संकलित मूल्यांकन

1. (क) सुंदर (ख) श्रेष्ठतम (ग) न्यून
   (घ) मीठा (ङ) लंबी

2. लड़का, फर्श, दरी, मक्खन

3. (क) जिन विशेषण शब्दों द्वारा संज्ञा तथा सर्वनाम की संख्या संबंधी विशेषता का बोध होता है उन्हें संख्यावाची विशेषण कहते हैं। जैसे—मेरे पास अनेक बर्तन हैं।, मेरी एक दुकान है।

(ख) जो शब्द संज्ञा और सर्वनाम की मात्रा या परिमाण का बोध कराते हैं, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे—दो किलो आम, एक दर्जन केले, तीन मीटर कपड़ा आदि।

(ग) जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा और सर्वनाम के रंग-रूप, आकार-प्रकार, गुण-दोष, काल-स्थान, दिशा, स्वाद, गंध, स्वभाव आदि से संबंधित विशेषता का बोध होता है, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे—(क) तालाब का पानी स्वच्छ था। (ख) वहाँ हमने छोटी-बड़ी मछलियों को देखा।

पाठ–10 : क्रिया

संकलित मूल्यांकन

1. पढ़ना, सोना, लिखना, हँसना, चलना, भागना, उठना, रोना, गाना, खाना
2. दुखाना, तुतलाना, नरमाना, अपनाना, बतियाना, खटकाना, दोहराना, बड़बड़ाना, गरमाना, टनटनाना
3. पढ़वाया—कक्षा में अध्यापिका ने मुझसे एक अभ्यास पढ़वाया।
   चलवाया—पिताजी ने मुझसे स्कूटर चलवाया।
   खिलवाया—दादी ने माताजी को खाना खिलवाया।
   दिलवाया—भिखारी को पानी दिलवाया।
   जगवाया—सुबह भाई को जल्दी जगवाया।
4. (क) दो या दो से अधिक धातुओं के मेल से बनने वाली क्रियाओं को संयुक्त क्रिया कहते हैं; जैसे—1. रोहन सोकर पढ़ा। 2. कशिश पढ़कर खेली।

(ख) वह क्रिया जिसका पूरा होना दूसरी क्रिया से पूर्व पाया जाता है, उसे पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं। अर्थात् मुख्य क्रिया से पहले होने वाली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है। पूर्वकालिक क्रिया के साथ प्राय: 'कर' या करके शब्द जोड़ा जाता है; जैसे—

1. तुषार अपनी बात कहकर चुप हो गया। 2. शिवम ने दूध पीकर पढ़ना शुरू कर दिया।

पाठ–11 : काल

संकलित मूल्यांकन

1. (क) भविष्यत्काल (ख) संदिग्ध भूतकाल
   (ग) तीन (घ) संदिग्धवर्तमान

2. (क) वर्तमान काल, सामान्य वर्तमान काल

(ख) भविष्यत् काल, हेतु-हेतुमद् (ग) भविष्यत् काल, संभाव्य

(घ) भूतकाल, आसन्न (ङ) भूतकाल, सामान्य

3. (क) स्नेता खाते-खाते बोलती रहती थी।

(ख) मैंने तुम्हें उपहार दिया था।

(ग) निशा ने खीर बनायी थी।

(घ) संदीप सीढ़ियों से चढ़ रहा था।

4. अपूर्ण वर्तमान काल—क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि वर्तमान काल में कार्य अभी पूर्ण नहीं हुआ, वह चल रहा है, उसे अपूर्ण वर्तमान कहते हैं। उदाहरण के लिए—विशाल विद्यालय जा रहा है। माँ खाना बना रही है।

संभाव्य भविष्यत् काल—क्रिया के जिस रूप से ज्ञात हो कि भविष्य में होने वाला कार्य पूर्ण रूप से निश्चित नहीं है अपितु होने की संभावना है, उसे संभाव्य भविष्यत् कहते हैं; जैसे—1. संभव है देश में चुनाव हो। 2. शायद कल अजीत स्कूल न जाए। 3. संभव है आज मैं बाजार जाऊँ।

हेतु-हेतुमद् भविष्यत्काल—जिस क्रिया का आने वाले समय में संभव तभी हो जब दूसरी क्रिया हो। इस प्रकार के वाक्य में दूसरी क्रिया, पहली क्रिया पर निर्भर करती है; जैसे—1. यदि गीता मेहनत करे तो प्रथम स्थान ले सकती है। 2. परीक्षा के लिए आवेदन पत्र भर जाएँगे तब परीक्षा होगी। 3. यदि वर्षा अच्छी होगी तो फसल अच्छी होगी।

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ–12 : वाच्य

संकलित मूल्यांकन

1. (क) कृर्तवाच्य (ख) कर्मवाच्य (ग) भाववाच्य

(घ) कर्मवाच्य (ङ) कृर्तवाच्य

2. (क) नौकर ने सफाई की।

(ख) मैं सोता नहीं हूँ।

(ग) लड़की से गाया नहीं जाता।

(घ) सुष्मिता से लड़ा नहीं जाता।

(ङ) नमिता के द्वारा स्वेटर बुना गया।

3. कृर्तवाच्य—जब क्रिया का रूप कर्ता के अनुसार होता है, तो उसे कृर्तवाच्य कहते हैं; जैसे—1. मैंने दूध पी लिया है। 2. लड़की चित्र बनाती है।

कर्मवाच्य—जिन वाक्यों में क्रिया के लिंग, पुरुष और वचन कर्म के अनुसार होते हैं उन क्रियाओं से युक्त वाक्यों को कर्मवाच्य कहते हैं; जैसे—1. सुरभि से मुँह धोया जाता है। 2. लड़की से खाना खाया जाता है।

पाठ–13 : संधि

संकलित मूल्यांकन

1. (क) स्व+छंद (ख) उत् + गम

(ग) गे + अन (घ) स्व + अस्ति

2. तवोवन, धनुषटंकार, निश्चित, सज्जन, शरच्चंद्, राजाज्ञा, सुषुप्ति, निषिद्ध, उपनयन

3. मन: + ताप, सम् + वाद, स्व + छंद, सत् + जन, उत् + लास, दिक् + गज, सूर्य + उदय, जगत + नाथ, षड + आनन, अन् + वेषक, नि + ऊन, वि + ऊह

पाठ–14 : समास

संकलित मूल्यांकन

1. (क) राजा-रानी (ख) पंचवटी (ग) चंद्रशेखर (घ) आमरण

2. (क) नवरात्र—द्विगु (ख) यथाशीघ्र—अव्ययीभाव (ग) लंबोदर—बहुब्रीहि (घ) आजन्म—अव्ययीभाव (ङ) विद्याहीन—तत्पुरुष (च) दाल-रोटी—द्वद्व (छ) निर्वाण प्राप्त—तत्पुरुष (झ) वनवास—तत्पुरुष

3. (क) तीन नदियों का समूह—द्विगु (ख) सम्मान को प्राप्त—तत्पुरुष (ग) नीले रंग का कमल—कर्मधारय (घ) चन्द्र के समान मुख—कर्मधारण (ङ) चार मासों का समूह—द्विगु (च) पथ से भ्रष्ट—तत्पुरुष (छ) घी और शक्कर—द्वद्व (ज) रात ही रात—अव्ययीभाव (झ) सौ वर्षों का समूह—द्विगु (ञ) प्रति एक—अव्ययीभाव

4. (क) जिस समास में पहला पद संख्यावाची तथा समस्तपद समूहबोधक हो वहाँ द्विगु समास होता है। जैसे— त्रिपाठी—तीन पाठों का समूह, पंचवटी—पाँच वटों का समूह

(ख) वह सामासिक शब्द जिसमें उत्तर पद (बाद का) प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। इनमें कारक चिह्नों का लोप हो जाता है। जैसे— राजकुमार—राजा का कुमार (पुत्र), विषयाध्यापक—विषय का अध्यापक

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ–15 : उपसर्ग

संकलित मूल्यांकन

1. उपसर्ग—अभि, अव, कु, पुन:, वि, वि, नि, ला, बा
   मूल शब्द—प्राय:, मानना, विचार, जन्म, मुख, भाग, हत्था, वारिस, इज्जत
2. अव—अवज्ञा, अवशेष; वि—विमुख, विशेष; कु—कुपुत्र, कुपोषण; बे— बेरहम, बेचारा; स्व—स्वधर्म, स्वभूमि; ला—लापता, लापरवाह; बिन—बिन बुलाया, बिन बोया; अनु—अनुरोध, अनुभव
3. उपसर्ग—क, पुनर्, सह, अ, स्व, अप, बिन, क
   नवीन शब्द—कुमार्ग, पुनर्मिलन, सहमति, अधर्म, स्वकथन, अपकीर्ति, बिनबोया, कपूत

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ–16 : प्रत्यय

संकलित मूल्यांकन

1. नया शब्द—सहमती, नीलगिरी, महानतम, बलवान, भुलक्कड़, लकड़हारा, चुहिया, धार्मिक, चटनी, रुकावट, महाकाल
2. मूलशब्द—शीतल, सरकार, सेठ, दो, छठ, मुख, सुख, भूगोल, अनुभव, निडर, रक्षा, मूल
   प्रत्यय—ता, ई, आनी, हरा, आ, इया, ई, इक, ई, ता, अक, त:

3. (क) जो प्रत्यय धातु को छोड़कर अन्य संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम और अव्यय के बाद लगाए जाते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं।

इक प्रत्यय के प्रयोग से शब्द के आरंभिक अक्षर में मात्रा की वृद्धि हो जाती है। जैसे—

धर्म + इक = धार्मिक, भूगोल + इक = भौगोलिक

तद्धित प्रत्यय आठ प्रकार के होते हैं—

1. कृर्तवाचक तद्धित प्रत्यय 2. क्रमवाचक तद्धित प्रत्यय
3. भाववाचक तद्धित प्रत्यय 4. संबंधवाचक तद्धित प्रत्यय
5. लघुवाचक तद्धित प्रत्यय 6. गुणवाचक तद्धित प्रत्यय
7. स्त्रीलिंगवाचक तद्धित प्रत्यय 8. बहुवचनवाचक तद्धित प्रत्यय

(ख) जिस प्रत्यय द्वारा बने शब्द से भाव का बोध होता हो, उसे भाववाचक कृत् प्रत्यय कहा जाता है; जैसे— भाववाचक कृतप्रत्यय

मूल शब्द—मिल, चल; लिख, चढ़, पलड़; छल, भूल, दिख; रुका, बना, सजा

शब्द—मिलन, चलन; लिखाई, चढ़ाई, लड़ाई; छलावा, भुलावा, दिखावा; रुकावट, बनावट, सजावट

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ–17 : अनेकार्थक शब्द

संकलित मूल्यांकन

1. (क) कृष्ण (ख) अनेक (ग) भँवरा
   (घ) समूह
2. समय, हाथ, अभाव, कल्याणकारी, वस्त्र, जवाब, वर्ष
3. (क) प्राणी, जगत, प्रेत (ख) परिवार, संतान, जाति
   (ग) धरती और आकाश के बीच, होंठ, नीचे
   (घ) जोड़, संयोग, उपाय

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ–18 : समरूपी भिन्नार्थक शब्द

संकलित मूल्यांकन

1. दूसरा, अनाज, इच्छा, वायु, हालत, धोखा, दरवाजा
2. (क) शुल्क (ख) आदी (ग) आचार (घ) परिणाम
3. (क) योग—निकटवर्ती वर्णों के योग से होने वाले परिवर्तन को संधि कहते हैं।

योग्य—पुराना फर्नीचर अब उपयोग करने योग्य नहीं रहा है।

(ख) अपेक्षा—बच्चों को अपनी माँ से बहुत अपेक्षा होती है कि वे उनकी जिद्द पूरी कर देगी।

उपेक्षा—हमें घर आये मेहमान की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

(ग) निधन—पिछले वर्ष ही सपना की दादी का निधन हुआ है।

निर्धन—कल्पना के पिताजी बहुत निर्धन हैं।

(घ) अवलंब—पिताजी के निधन के बाद राहुल की माँ का एकमात्र अवलंब राहुल ही है।

अविलंब—रास्ते में एक सड़क-हादसा हो गया था। पुलिस ने घायलों को अविलंब अस्पताल भिजवाया।

पाठ–19 : वाक्य अशुद्धि शोधन

संकलित मूल्यांकन

1. (क) कर्ता के साथ क्रिया की अन्विति
   (ख) कर्म और क्रिया की अन्विति
2. (क) पुस्तक पर नहीं लिखो। पुस्तक पर मत लिखो।
   (ख) सारे केले हाथ-हाथ बिक गए। सारे केले हाथों-हाथ बिक गए।
3. (क) पद्क्रम अशुद्धि
   (ख) लिंग तथा वचन संबंधी अशुद्धि (ग) कारक संबंधी अशुद्धि
   (घ) पुनरूक्ति संबंधी अशुद्धि (ङ) संज्ञा संबंधी अशुद्धि
   (च) लिंग तथा वचन संबंधी अशुद्धि (छ) कारक संबंधी अशुद्धि
   (ज) संज्ञा संबंधी अशुद्धि

4. (क) अशुद्ध (ख) अशुद्ध (ग) शुद्ध
   (घ) शुद्ध (ङ) शुद्ध (च) शुद्ध
   (छ) शुद्ध

रचनात्मक मूल्यांकन

• **निम्नलिखित वाक्यों में से शुद्ध वाक्य के सही विकल्प को चुनिए-**

(क) मुझे घर जाना है।
(ख) उसने मिठाई और दही खाई।
(ग) वह रुग्ण-शय्या पर पड़ा है।

पाठ–20 : मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ

संकलित मूल्यांकन

1. (क) बच्चों की जिद्द पूरी न करने पर बच्चे गरदन पर सवार हो जाते हैं।
   (ख) दीवाली पर घर में घी के दीये जलाये जाते हैं।
   (ग) राम दिन में भी घोड़े बेचकर सोता है।
   (घ) पहले तो बच्चों ने नुकसान कर दिया फिर मजे ले रहे हैं। ये तो वही बात हुई घर फूँक के तमाशा देखना।
   (ङ) राघव के चाचा की मौत रोड पर एक हादसे में हुई थी। वह जब भी उस रोड से गुजरता है उसका घाव हरा हो जाता है।
   (च) सुनील को कितना ही समझा लो, वह तो चिकना घड़ा है।
   (छ) नये घर में शादी की सजावट घर को चार चाँद लगा रही थी।

लोकोक्तियाँ

संकलित मूल्यांकन

1. (क) जो मनुष्य जिस स्थान या समाज में रहता है उसको उसी जगह या समाज के लोगों की बात समझ में आती है। यह तो वही बात हुई—खग ही जाने खग की भाषा।
   (ख) मेरे पूरे महीने परिश्रम से प्रयोग करने के बाद भी मुझे दस में से एक ही अंक मिला। खोदा पहाड़ निकली चुहिया।
   (ग) यदि आप किसी के साथ अच्छा नहीं करते हो तो कभी आपके साथ भी अच्छा नहीं होगा। इसलिए कहावत है—बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ से पाए।

(घ) सुमित : मुझे ब्रेड खाना पसन्द है। महेश : आलू का परांठा ब्रेड से ज्यादा स्वादिष्ट होता है। बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद।

(ङ) यदि आप बुरे लोगों के साथ रहोगे तो बदनामी भी अवश्य होगी। कोयले की दलाली में मुँह अवश्य काला होता है।

2. पसंद आना, कोरी धमकी, रूठना, मारे-मारे फिरना, बहुत परिश्रम करना

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

■■■

व्याकरण अवनी-8

पाठ-1 : भाषा और व्याकरण

संकलित मूल्यांकन

1.(क) (✓) (ख) (✓) (ग) (✓) (घ) (✗)

2. (क) मौखिक (ख) मौखिक (ग) हिंदी (घ) रोमन (ङ) ज्ञान के संचित कोश को

3. (क) राष्ट्रभाषा (ख) स्थाई (ग) शुद्ध (घ) लिखित भाषा (ङ) हिंदी

4. कवि—सूरदास, तुलसीदास, जयशंकर प्रसाद, रामवृक्ष बेनीपुरी

5. (क) भाषा सार्थक ध्वनियों का वह समूह है, जिसके माध्यम से हम अपने विचार दूसरे दूसरों के सामने रखते हैं और दूसरों के विचार ग्रहण करते हैं। भाषा के दो रूप होते हैं—1. मौखिक भाषा 2. लिखित भाषा।

(ख) भाषा के लिखित रूप में जिन ध्वनि चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें लिपि कहते हैं।

(ग) भाषा एवं बोली में अंतर—'भाषा' का क्षेत्र बहुत व्यापक है जबकि 'बोली' सीमित क्षेत्र में बोली जाती है। 'भाषा' का लिखित साहित्य व व्याकरण होता है। 'बोली' में लिखित साहित्य बहुत ही कम उपलब्ध है। 'इसमें' व्याकरण को भी महत्व नहीं दिया जाता। 'बोली' में कहावतों, लोकगीतों और लोक कथाओं की बहुलता होती है।

(घ) व्याकरण वह शास्त्र है, जिसके द्वारा हम भाषा के शुद्ध स्वरूप व शुद्ध प्रयोग का ज्ञान प्राप्त करते हैं। व्याकरण के भेद—व्याकरण के तीन भेद हैं—

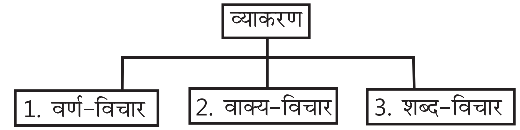

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ-2 : वर्ण और वर्तनी

संकलित मूल्यांकन

1. रूमाल—र + ू + म + ा + ल, कमीज—क + म + ी + ज, जूते—ज + ू + त + े, बस्ता—ब + स् + त + ा, किताब—ि + क + त + ा + ब।

2. गुरू—गुरु, ज्योती—ज्योति, ग्रहणी-ग्रहिणी, पथ्थर-पत्थर, हिंदूस्तान-हिंदुस्तान, ब्रत-व्रत, भोगौलिक-भौगोलिक, छमा-क्षमा, परचित-परिचित, पूज्यनीय-पूजनीय, पत्नि-पत्नी, निदर्य-निर्दय, प्रमात्मा-परमात्मा।

3. संयुक्त वर्ण—क्ष, त्र, ज्ञ, श्र; ऑगत वर्ण—ऑ, ज, फ; पवर्ग व्यंजन—प्, फ्, ब्, भ्, म्; टवर्ग व्यंजन—ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ-3 : संज्ञा

संकलित मूल्यांकन

1. (क) ममतामयी (ख) ऊपर (ग) कुटिलता (घ) जलन

2. अपनत्व, गरीबी, ऊपरी, भलाई, मनाही, भूख, निकटता, पशुत्व, नजदीकी, प्रभुत्व, बचाव, सज्जनता, पिटाई, बुढ़ापा

3. व्यक्तिवाचक संज्ञा—दिनेश, मद्रास, बाजार, रामचरितमानस

जातिवाचक संज्ञा—स्लेट, कॉपी, बेलन, प्याला

भाववाचक संज्ञा—बुरा, मूर्खता, सहानुभूति

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ–4 : लिंग

संकलित मूल्यांकन

1. गायिका, हंसनी, विधवा, मजदूरिन, नायिका, पुत्रवती, ठकुराइन, रूपवती, स्वामिनी, देवी, योगिनी, थाली
2. स्त्रीलिंग—कुटिया, धड़कन, प्रशंसा, चुहिया, प्रकृति, स्तुति

   पुल्लिंग—आवेश, व्यवसाय, उद्योग, आलस, परिश्रम
3. शिक्षक—विद्यालय में शिक्षिका विद्यार्थी को पढ़ाती है।

   रस्सा—रस्सी का उपयोग कैम्प में अधिक होता है।

   हाथी—बच्चों ने सुबह हथनी को देखा।

   ठकुराइन—ठाकुर गाँव का सरपंच है।

पाठ–5 : कारक

संकलित मूल्यांकन

1. (क) संबंध (ख) सम्प्रदान (ग) अधिकरण
   (घ) संबोधन (ङ) अपादान
2. (क) में (ख) को, ने (ग) ने
   (घ) से (ङ) लिए (च) पर
3. (क) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य में क्रिया के साथ जाना जाए, उसे कारक कहते हैं।

   (ख) कारक के आठ भेद होते हैं—

   1. कर्ता कारक, 2. कर्म कारक, 3. करण कारक, 4. सम्प्रदान कारक, 5. अपादान कारक, 6. संबंध कारक 7. अधिकरण कारक, 8. संबोधन कारक

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ–6 : सर्वनाम

संकलित मूल्यांकन

1. (क) निजवाचक (ख) निजवाचक (ग) प्रश्नवाचक
   (घ) निश्चयवाचक (ङ) अनिश्चयवाचक
2. कौन—तुम कौन हो?

   क्या—यह क्या है?

   तुम—तुम कहाँ जा रहे हो?

   हम—हम कल घूमने गये थे।

   स्वयं—अपना काम स्वयं करना चाहिए।

   वह—वह कल दिल्ली गया था।
3. (क) सर्वनाम के छह भेद होते हैं—

   1. पुरुषवाचक सर्वनाम 2. निश्चयवाचक सर्वनाम
   3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम 4. प्रश्नवाचक सर्वनाम
   5. संबंधवाचक सर्वनाम 6. निजवाचक सर्वनाम

   (ख) वे सर्वनाम शब्द जो किसी निश्चित वस्तु अथवा व्यक्ति का बोध नहीं कराते, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—कौन, कुछ, कोई आदि।

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ–7 : वाच्य

संकलित मूल्यांकन

1. (क) सोमेश से नहाया जाता है। (ख) रवि से लिखा जाता है।
   (ग) नीतेश से पढ़ा जाता है। (घ) राशि से गाया जाता है।
   (ङ) मधु से चला जाता है।
2. (क) कर्तवाच्य (ख) कर्मवाच्य (ग) कर्तवाच्य
   (घ) भाववाच्य (ङ) कर्मवाच्य

3. (क) सुमित के द्वारा भाषण दिया जाता है।
(ख) सोनू से धीमे चला जाता है।
(ग) मोहित के द्वारा पतंग उड़ाई गई।
(घ) नमिता झूले के द्वारा झूल रही है।

पाठ–8 : काल

संकलित मूल्यांकन

1. (क) वर्तमान—अपूर्ण (ख) वर्तमान—संदिग्ध
(ग) भूतकाल—सामान्य (घ) वर्तमान—अपूर्ण
(ङ) भविष्यत्—सामान्य

2. (क) मैं पुस्तक पढ़ूँगा।
(ख) यदि वह आयेगा तो मैं उसे पुस्तक दे दूँगा।
(ग) वह सोयेगा।
(घ) नमिता घर जायेगी।

3. (क) कल वर्षा हुई थी। (ख) उन्होंने चाय या कॉफी पी होगी।
(ग) तुम काफी देर से आए थे। (घ) मुझे कपड़े धोने थे।

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ–9 : विशेषण

संकलित मूल्यांकन

1. पोषक, मरियल, कथित, अमीरी, विशेषण, मौलिक, सुरभित, मुखरित, वैष्णव

2. सु—सुगम, सुलभ; निर—निर्बल, निर्लज्ज; दुर—दुर्जन, दुर्गम;
प्र—प्रसिद्ध, प्रबंध, बद—बदहाल, बदनाम; ला—लाजवाब, लाइलाज

3. (क) सयानी—गुणवाचक (ख) शर्मीली—गुणवाचक
(ग) कौन खड़ा—संकेतवाचक (घ) यह—सार्वजनिक
(ङ) धार्मिक—गुणवाचक

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ–10 : शब्द भंडार

संकलित मूल्यांकन

1. मृगराज, वनराज, केसरी; शुद्ध, पवित्र, पावन; पावक, ज्वाला, आग; प्रभु, भगवान, जगदीश; अनोखा, अपूर्व, निराला; घोड़ा, चेतक, तुरंग; राक्षस, दानव, दनुज।

2. सुरेन्द्र, चक्षु, वल्लरी, अवहेलना, मुक्ति, मति, तनय

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

विपरीतार्थक शब्द

संकलित मूल्यांकन

1. दुर्गम, कुपात्र, सार्थक, विस्तार, दंड, स्तुति, अवरोध, अल्पज्ञ, पशुता, अनार्य
2. ऐच्छिक, तिरोभाव, अज्ञ, क्षुद्र, उदयाचल, निरपेक्ष

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द

संकलित मूल्यांकन

1. (क) मानवीय (ख) निराकार (ग) अदम्य
(घ) आत्मघात (ङ) कुशाग्र बुद्धि

2. (क) तरंग—समुद्र में तरंग बहुत लंबी होती है।
तुरंग—राजाओं को तुरंग की सवारी बहुत प्रिय थी।
(ख) कुल—कुल 45 विद्यार्थी बस में गये।
कूल—गंगा तट के कूल पर काफी घाट बने हुए हैं।
(ग) कोश—हिन्दी भाषा में कोश भरा हुआ है।
कोष—पुराने किलों की इमारतों में कोष गढ़े हुए मिलते हैं।
(घ) अपेक्षा—बच्चों को अपनी माँ से बहुत अपेक्षा होती है कि वे उनकी जिद्द पूरी कर देगी।
उपेक्षा—हमें कभी भी बड़ों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

(ङ) इस्त्री—इस्त्री से कपड़े सुखाये जा सकते हैं।

स्त्री—इंदिरा गाँधी नाम की स्त्री हमारे देश की प्रधानमंत्री थी।

3. समूह, रकम, धन; पति का बड़ा भाई, एक महीना; स्वर्ग, सम्मान, नासिका; बिजली, लक्ष्मी; निकट, बाण

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ–11 : संधि

संकलित मूल्यांकन

1. निरर्थक, सप्तऋषि, वधूत्सव, भारतेन्दु, दिनेश, महर्षि, व्यूह, इत्यादि
2. सु + अच्छ, अनु + एषण, महा + औषध, सद + ऐव, गंगा + ऊर्मि
3. मधु + उष्मा = मधूष्मा, सुर + ईश = सुरेश, मनः + ताप = मनस्ताप, प्रति + उपकार = प्रत्युपकार, जीव + एषणा = जीवैषणा

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ–12 : समास

संकलित मूल्यांकन

1. (क) राजा-रानी (ख) पंचवटी (ग) चंद्रशेखर (घ) आमरण
2. (क) तीन भवनों का समूह—द्विगु (ख) सम्मान को प्राप्त—तत्पुरुष (ग) नीले रंग का कमल—कर्मधारय (घ) चंद्र के समान मुख—कर्मधारय (ङ) चार मासों का समूह—द्विगु (च) पथ से भ्रष्ट—तत्पुरुष (छ) घी और शक्कर—द्वद्व (ज) रात-रात में—अव्ययीभाव (झ) सौ वर्षों का समूह—द्विगु (ञ) प्रति एक—अव्ययी भाव
3. (क) नवरात्र—द्विगु (ख) यथाशीघ्र—अव्ययीभाव (ग) लंबोदर—बहुब्रीहि (घ) आजन्म—अव्ययीभाव (ङ) विद्याहीन—तत्पुरुष (च) दाल-रोटी—द्वद्व (छ) निर्वाण प्राप्त—तत्पुरुष (ज) वनवास—तत्पुरुष
4. (क) जिस समास में पहला पद संख्यावाची तथा समस्तपद समूहबोधक हो वहाँ द्विगु समास होता है। जैसे—

त्रिपाठी—तीन पाठों का समूह, पंचवटी—पाँच वटों का समूह

त्रिलोक—तीन लोकों का समूह, चौराहा—चार राहों का समूह

(ख) वह सामासिक शब्द जिसमें उत्तर पद (बाद का) प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। इनमें कारक चिह्नों का लोप हो जाता है। जैसे—

राजकुमार—राजा का कुमार (पुत्र), विषयाध्यापक—विषय का अध्यापक, घुड़सवार—घोड़े पर सवार, कृपासागर—कृपा का सागर

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ–13 : उपसर्ग और प्रत्यय

संकलित मूल्यांकन

1. बद, ना, सु, वि, कु, अन, ऊ, ला, भर
2. अपयश, दुरुपयोग, अनुवाद, परामर्श, अतिकाल, संवाद, उपयोग, विकार
3. बद—बदनाम, बदहजमी, बदसूरत; दर—दरमियान, दरबार, दरअसल

   सर—सरदार, सरहद, सरपंच; बे—बेचारा, बेमतलब, बेगुनाह

   ला—लावारिस, लापता, लापरवाह
4. मूल शब्द—बू, लोक, चक्र, जोर, वारिस, मान, गुण

   उपसर्ग—बद, पर, कु, कम, ला, अभि, अव

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

प्रत्यय

संकलित मूल्यांकन

1. भारत + ईय, भौत + इक, ससुर +आल, झाड + अन, ढक + अन, सज + आवट, मिल + आवट, पंडित + आई, बढ़ + इया, साँप + ऐरा
2. वार्षिक, मासिक; चचेरा, फूफेरा; मानना, सूखा; करेला, नवेला; सब्जीवाला, मिठाईवाला; लिखावट, गिरावट; खंडित, पीड़ित; पेटू, मोटू

3. प्यास + आ = प्यासा, नानी + हाल = ननिहाल, पत्र + कार = पत्रकार, गुलाब + ई = गुलाबी, रसोई + ईया = रसोईया, रस + ईला = रसीला, गीत + कार = गीतकार, कला + कार = कलाकार, पत्र + वाला = पत्रवाला, नृत्य + कार = नृत्यकार

पाठ-14 : मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

संकलित मूल्यांकन

1. **मिट्टी का माधो- बहुत ही मूर्ख-**हमारे पड़ोस में एक लड़का बिल्कुल मिट्टी का माधो है।

माथा ठनकना- संदेह होना-जब राहुल स्कूल से आने में देर हुआ तो राहुल की माँ का माथा ठनका कि वह स्कूल नहीं गया।

मुँह फुलाना- नाराज होना-बच्चे अगर मुँह फुलाके बैठ जायें तो बड़ी मुश्किल से मानते हैं।

मुट्ठी में होना- वश में होना-सुमन की माँ ने पूरे घर को मुट्ठी में कर रखा है।

मोती पिरोना- सुंदर लिखना-राखी की कॉपी में ऐसा लिखा होता है मानो कॉपी में मोती पिरो रखे हों।

मुँह पर कालिख लगाना- कलंक लगाना-सविता अपने घरवालों के मुँह पर कालिख लगाकर भाग गयी।

लकीर का फकीर- पुरानी बातों पर चलना-रमेश तो लकीर का फकीर है भला विधवा विवाह के लिए कैसे राजी होगा।

लहू पसीना एक करना- बहुत परिश्रम करना-रामू के पिताजी लहू पसीना एक करके रामू को पढ़ाते हैं।

लोहा मानना- प्रभाव मानना-बाजीराव पेशवा ने अंग्रेजों से अपनी वीरता का लोहा मनवाया।

लेने के देने पड़ना- लाभ के बदले हानि उठाना-सुखी ने तो लाभ के लिए व्यापार में पैसा लगाया व्यापार तो चला नहीं और लेने के देने पड़ गये।

विष उगलना- कटु वचन कहना-घर के सामने वाली चाची हर समय अपनी बहू को विष उगलती रहती है।

साँप को दूध पिलाना- शत्रु को पालना-सोनू हर समय मोनू को हानि पहुँचाता रहता है। फिर भी सोनू मोनू को अपने पास घर में रखता है। सोनू समझ नहीं रहा है कि वह एक साँप को दूध पिला रहा है।

सिर नीचा करना- बेइज्जती करना-अमित से घर वालों को बहुत उम्मीद थी कि वह घर का नाम रोशन करेगा, लेकिन फेल होकर उसने सबका सिर नीचा कर दिया।

सिर खाना- तंग करना-स्कूल की छुट्टी वाले दिने तो बच्चे सिर खाते रहते हैं।

सूरज को दीपक दिखाना- प्रसिद्ध व्यक्ति का परिचय देना-शादी में एम. एल.ए. आया हुआ था और सभी एक-दूसरे को उसका परिचय दे रहे थे। ये तो वही बात हुई सूरज को दीपक दिखाना।

सिर आँखों पर बैठाना- बहुत सम्मान करना-मेरे पिताजी अपने बड़े भाईयों को सिर आँखों पर बैठाकर रखते हैं।

सठिया जाना- बुद्धि नष्ट होना-सभी लोग कहते हैं कि लोगों की बुढ़ापे में बुद्धि सठिया जाती है।

हाथ धोकर पीछे पड़ना- बुरी तरह पीछे पड़ना-सुमन नई ड्रेस लाने के लिए पिताजी के पीछे हाथ धोकर पड़ गयी।

हाथ मलना- पछताना-अमन ने जब केशव से कहा था कि अभी ये जीन्स ले ले तब ली नहीं, बाद में लेने गया तो वह बिक चुकी थी। वह हाथ मलता हुआ रह गया।

हाथ धो बैठना- खो देना-हर्ष अपने नये मोबाइल से अपनी गलती से ही हाथ धो बैठा।

हवा का रुख पहचानना- परिस्थिति समझना-नेगी के पिताजी हवा का रुख पहचानने में ज्ञानी है।

हाथों-हाथ बिक जाना- बहुत जल्दी बिक जाना-बाजार में कोई अच्छी वस्तु आते ही हाथों-हाथ बिक जाती है।

हाथ-पाँव फूलना- घबरा जाना-तुषार की माँ के बुरी खबर सुनते ही हाथ-पाँव फूलाने लगते हैं।

हाथ फैलाना- माँगना-किसी के सामने हाथ फैलाना बहुत बुरी बात होती है।

उड़ती चिड़िया के पर पहचानना- अनुभवी होना/रहस्य की बात जान लेना-अनुभवी व्यक्ति उड़ती चिड़िया के पर पहचान लेते हैं।

उन्नीस-बीस का अंतर- बहुत कम फर्क-शक्ति और प्रांजल की उम्र में उन्नीस-बीस का ही अंतर है।

एक पंथ दो काज- एक काम से दो लाभ-माँ ने काजल से कहा तू स्कूल तो जा ही रही है रास्ते में दुकान पर पिताजी को खाना देती चली जा एक पंथ दो काज हो जायेंगे।

लोकोक्तियाँ

1. (क) **डूबते को तिनके का सहारा- असहाय के लिए थोड़ी सहायता भी बहुत होती है-**किसी को कठिनाई में कठिनाई से निकलने का थोड़ा-सा रास्ता ही मिले उसके लिए तो वह डूबते को तिनके के सहारे के समान लगता है।

(ख) **साँप मरे, पर लाठी न टूटे- नुकसान के बिना ही काम हो जाना-** पापा ने कहा कि तुम घर जाकर सो जाना मम्मी डाटेगी नहीं और उठोगे तो खाने को भी दे देगी माँ का गुस्सा भी शांत हो जायेगा और तेरे को डाँट भी नहीं पड़ेगी।

(ग) **राम जी की माया कहीं धूप कहीं छाया- सब कुछ भगवान की इच्छा से होता है-**जो भी होता है राम जी की माया से होता है इसलिए कहते हैं—रामजी की माया कहीं धूप कहीं छाया।

(घ) **नाम बड़े और दर्शन छोटे- दिखावा अधिक वास्तविकता कम-** कल सुधीर ने कहा सितारा होटल बहुत अच्छा है जाकर देखा तो कुछ भी नहीं वही बात थी नाम बड़े दर्शन छोटे।

(ङ) **होनहार बिरवान के होत चिकने पात- होनहार लोगों के शुभ लक्षण उनके बाल्यकाल में ही झलकते हैं-**घर के सभी बड़े लोग ऐसा कहते हैं कि होनहार बिरवान के होत चिकने पात।

(च) **घर का भेदी लंका ढाए- आपसी फूट हानिकारक होती है-**रावण की मौत का रहस्य रावण के भाई विभीषण ने ही रामजी को बताया अन्यथा रावण को मारा नहीं जा सकता था इसलिए कहावत कही गयी है—घर का भेदी लंका ढाए।

(छ) **खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है- बुरी संगति का प्रभाव अवश्य पड़ता है-**सुरेश बहुत अच्छा विद्यार्थी था अपनी कक्षा का परन्तु जब से वह बुरी संगत में पड़ा तब से बिगड़ गया। वही बात है खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है।

(ज) **अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत- अवसर निकल जाने पर पछताना व्यर्थ है-**रितिशा का एस०एस०सी० का पेपर था। जब तारीख थी तब तो दिया नहीं अब पछता रही है। तब उसकी माँ ने उससे कहा—अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।

(झ) **हाथ कंगन को आरसी क्या- प्रत्यक्ष को प्रमाण की जरूरत नहीं-** शैफाली पढ़ाई में बहुत होशियार है उसके परिणाम की किसी को कोई फिक्र नहीं होती, क्योंकि हाथ कंगन को आरसी क्या।

(ञ) **मियाँ की दौड़ मस्जिद तक- सीमित क्षेत्र तक ही आना-जाना-** कुणाल पड़ोस में सिर्फ अपने मित्र के ही जाता है अगर वह बिना बताये भी जाये तभी भी यही कहा जाता है—मियाँ की दौड़ मस्जिद तक।

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

पाठ-15 : विराम-चिह्न

संकलित मूल्यांकन

1. प्रश्नवाचक चिह्न, विवरण चिह्न, लाघव चिह्न, विस्मरण चिह्न, हंसपद चिह्न
2. पहले-पहले विद्यार्थी को पढ़ना-लिखना एक मुसीबत जान पड़ता है। किंतु, धीरे-धीरे उसे यह अच्छा लगने लगता है। यदि पुस्तकों से प्रेम हो तो, हमें खजाना ही मिल जाता है। पुस्तकों से न केवल ज्ञान बढ़ता है, वरन् शांति से ध्यान एकाग्र करने की योग्यता भी अर्जित होती है। जीवन के उतार-चढ़ाव और नाना प्रकार की समस्याओं के बीच पुस्तकें हमारी सच्ची मित्र और मार्गदर्शक बन जाती हैं।

रचनात्मक मूल्यांकन

स्वयं कीजिए।

■■■